भारतीय चित्रकला में वॉश तकनीक का परिचय

प्राप्तिः 06.09.2025
स्वीकृतः 13.09.2025

69

शैफाली राणा
शोधार्थी (चित्रकला विभाग)
गोकुल दास हिंदू गर्ल्स कॉलेज,
मुरादाबाद, उ0प्र0
एम.जे.पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली
ईमेलः *saifalirana123456@gmail.com*

प्रो0 पुनीता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर (चित्रकला विभाग)
गोकुल दास हिंदू गर्ल्स कॉलेज,
मुरादाबाद, उ0प्र0

सारांश

भारतीय चित्रकला अत्यंत समृद्ध और विविधताओं से भरी हुई रही है। इसमें विभिन्न शैलियों और तकनीक शामिल है जिसमें वॉश तकनीक का महत्वपूर्ण स्थान रहा है जिसे प्रक्षालन या धोवन वह विधि भी कहा जाता है। भारतीय चित्रकला में इसको महत्वपूर्ण एक युग परिवर्तन तकनीक माना गया है।इस तकनीक के प्रयोग से कलाकार स्वयं को भारतीय आत्मीयता से जोड़ पाए वॉश पद्धति में चित्रों का निर्माण जल रंग के माध्यम से कागज पर चित्रित किए जाते हैं। यह एक दृश्य कला तकनीक है जिसमें रंग एक पतली अर्ध पारदर्शी परत की तरह प्रतीत होते हैं इसमें गतिशीलता और आकर्षक दृश्य प्रभाव उत्पन्न होता है इस पद्धति में रंगों की पारदर्शिता एवं गहराई चित्रों को विशेष सौंदर्य प्रदान करती है। जिससे चित्रों में सरसता मां शीतलता एवं शांति प्रदान करने वाले सौंदर्य उत्पन्न होता है जो चित्र को सहज ही आकर्षित कर लेता है वॉश पद्धति के माध्यम से बनाए गए चित्रों के सौंदर्य में आध्यात्मिकता की अनुभूति प्रतीत होती है।चित्रों में रंगों की धुंधलापन व उसमें से झांकी आकृतियां दशक के मन को मोह लेती हैं।अत उनका चित्रों के अन्य तत्वों को खोजने हेतु प्रेरित करती हैं इस पद्धति में भारतीय परंपरा लोक कथाएं पौराणिक प्रसंग और ऐतिहासिक घटनाएं चित्रकारों द्वारा चित्रित की गई है। समीक्षकों ने वॉश पद्धति के चित्रों की प्रशंसा की ओर इस पर लेख भी लिखे हैं वॉश तकनीक के सफलता ने अन्य कलाकारों को नवीन प्रयोग करने हेतु प्रेरणा दी इस पद्धति के प्रयोग से कलाकारों ने प्राचीन भारतीय गौरव एवं अजंता वह भाग शैली के सौंदर्य को पुन प्राप्त करने हेतु का उत्तम कार्य किया वर्तमान समय में वर्ष तकनीक एक परंपरा के रूप में भारतीय कला महाविद्यालय मैं पढ़ाई में सिखाई जा रही है।

मुख्य बिंदु

वॉश पद्धति, बंगाल शैली के कलाकार,, वॉश पद्धति का इतिहास

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.69

शोध पत्र का महत्व

शोध पत्र में वॉश पद्धति के बिंदुओं और महत्व पर विशेष ध्यान दिया गया है जिसमें वॉश पद्धति के इतिहास तथा आधुनिक वॉश कलाकारों के विषय और तकनीक पर चर्चा की गई है। आधुनिक भारतीय चित्रकला में यह पद्धति बंगाल स्कूल में फली फूली परंतु समय के साथ साथ यह पद्धति कुछ ही संस्थानों तक सीमित रही और धीरे–धीरे विलुप्त होती जा रही है जिसकी और कलाकारों को ध्यान देना आवश्यक है शोध पत्र में आधुनिक और समकालीन कलाकारों ने वॉश पद्धति में चित्रण कार्य किया उनका विस्तृत अध्ययन किया गया है।

शोध का उद्देशय

शोध पत्र का उद्देश्य विलीन होती जा रही वॉश पद्धति को पुनः सुरक्षित रखना है। चित्रांकन के लिए माध्यमों पर प्रतिबंध नहीं है लेकिन भारतीय कला को उजागर करने के लिए भारतीय चित्रों में वॉश पद्धति को समझना अति आवश्यक होगा तथा वॉश तकनीक को विलुप्त होने से बचने के लिए यह जानना आवश्यक है। विलुप्त होने के कारण क्या है। शोध पत्र में उन करणों और वॉश पद्धति के कलाकारों को उजागर करने की कोशिश की गई है।

परिचय

प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक हमें भारतीय चित्रकला में अनेकों नवीन परिवर्तन देखने को मिलते रहे हैं। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति हमेशा से परिवर्तन शीलता और बाय तत्व को अपने में आत्मसात करने वाली रही है यह गुण हमें संस्कृति के अभिन्न अंग चित्रकला में भी प्रतीत होता है।जिस प्रकार भारतीय संस्कृति के अंक र्शन संगीत नृत्य आदि समय–समय के साथ बदलने वाले तत्वों को अपने में समाहित करती रही है। उसी प्रकार चित्रकला भी अलग–अलग समय में विभिन्न रूप रंगों को धारण करती रही हैं। चित्रकला में रूपभेद तकनीक समाज धर्म और राजनीतिक परिवर्तन का सूचक रहा है। प्राचीन काल में मौर्य गुप्त सातवाहन राष्ट्रकूट वाकाटक आदि काल की कलात्मक उपलब्धियां की झांकियां हमें अजंता एलोरा आदि गुफाओं में देखने को मिलती हैं। चित्रकला किस रूप में बदलाव के लिए राजनीतिक कारण भी मुख्य रहा है अजंता बाग बदामी पाल जैन अपभ्रंश राजस्थानी मुगल पहाड़ी सभी कल शैलियों के विकास में संरक्षण हेतु राजवंशों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके प्रकार कहा जा सकता है कंपनी शैली के उद्भव में भारतीय अंग्रेजों के संयुक्त का राजनीतिक कारण ही सबसे महत्वपूर्ण रहा।

भारतीय और अंग्रेजों के संबंध से भारतीय संस्कृति में नवीन परिवर्तन आए। संस्कृति के इस परिवर्तन से उसका कोई अवयव नहीं बच पाया चित्रकला पर भी भारतीय और अंग्रेजों के संबंध का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है।जिस कारण चित्रकला स्वयं का मौलिक स्वरूप को बैठी स्थानीय कलाकार पश्चिमी चित्रकला का अनुकरण करने लगे और इसको ही अपना ध्येय बना लिया उसमें ही आनंद प्राप्त करने लगे जिस कारण भारतीय चित्रकला का अपना मौलिक स्वरूप वह चमक और आकर्षक कहीं लुप्त हो गई अंग्रेजों द्वारा पश्चिमी चित्रकला को उच्च व श्रेष्ठ माना जाता था।वहीं भारतीय चित्रकला को ही दृष्टि से देखा जाता था तथा मजाक उड़ाया जाता था अंग्रेजों ने पश्चिमी चित्रकला की शिक्षा हेतु विभिन्न कला महाविद्यालयो का निर्माण कराया भारतीयों ने विभिन्न कलश

शैलियों का अध्ययन किया जिस कारण से एक ऐसा दौर आया जिसे भारतीय चित्रकला में संक्रमण का दौर कहा गया यह समय भारतीय चित्रकला में अस्पष्टता व दिशाहीनता का सूचक था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन चित्रकारों के लिए एक अवसर जैसा प्राप्त हुआ जिस कारण विश्व देसी और भारतीय कहीं जा सकते वाली चित्र शैली और रचना पद्धति की खोज की और अग्रसर हुए इन आंदोलनों का प्रभाव बंगाल स्कूल पर स्पष्ट दिखाई दिया 1884 ईस्वी में ई वी हैवेल को प्रधानाचार्य के रूप में मद्रास कॉलेज आफ आर्ट में नियुक्त किया गया था तथा 1896 में उनका स्थानांतरण कोलकाता कला विद्यालय में कर दिया गया हैवेल ने भारत भ्रमण किया कला में राष्ट्रवादी लहर का नेतृत्व अवनींद्र नाथ टैगोर (1871से 1951)वह कुछ प्रबुद्ध यूरोपीय जैसे ई बी हैवेल है बोल जो गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट कोलकाता के प्रधानाचार्य थे एवं सिस्टर निवेदिता जो स्वामी विवेकानंद की सहयोगी थी आदि ने किया भारतीय अध्यात्म से पश्चिमी जगत प्रभावित था इसीलिए अंग्रेजी कला शिक्षक हैवेल्स साहब ने कोलकाता स्कूल में शिक्षण में नए बदलाव किए हवेल के अनुसार भारतीय आध्यात्मिक गुण पाश्चात्य भौतिकवाद से अधिक प्रभावित थे उन्होंने छात्रों को मुगल लघु चित्रों की अनुक्रिया तैयार करने को कहा उसे समय इसका काफी विरोध भी हुआ अवनी नाथ टैगोर ने ब्रिटिश में भारतीय बुद्धिजीवियों की पसंद से दूर हटकर प्राचीन भित्ति चित्रों एवं मध्यकालीन लघु चित्रों के विषय सामग्री वह टेंपरेचर जैसी तकनीक से प्रणाली उन्होंने संपूर्ण भारतीय कला के दर्शन का विकास किया बंगाल की सीमाओं के बाहर भी अनेकों कलाकार वह विद्यार्थियों ने उनकी इस शैली का प्रतिपादन किया और कला में राष्ट्रवादी धारा ले स्वदेशी आंदोलन के प्रति उत्तर में उन्होंने भारतीय कला की दृश्य परंतु आधुनिक शैली का विकास किया जिसमें उन्होंने पश्चिमी शैली को सिरे से नकार दिया जिसे राजा रवि वर्मा जैसे कलाकार प्रयोग में ला रहे थे ।इन सभी के सहयोग से बंगाल स्कूल को प्रसिद्धि प्राप्त हुई तथा भारतीय चित्रकला को भारतीय आंदोलन से पुनर जुड़ने का अवसर मिला और वॉश पद्धति इस बंगाल शैली का आधार बनी।

वॉश पद्धति को विभिन्न कॉलेज में पल्लवित किया गया

1. नंदलाल बॉस इंस्टिट्यूशन का फाइन आर्ट कला भवन सांतिनिकेतन
2. डी.पी.राय चौधरी गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट चेन्नई
3. सत्येंद्र नाथ मंजूमदार इलाहाबाद विश्वविद्यालय
4. सुमित्रा नाथ गुप्त एम ए आर चुगताई गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट लाहौर
5. असित कुमार हलदर कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट लखनऊ
6. शैलेंद्र नाथ डे राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट जयपुर
7. शारदा चरण वकील शारदा वकील स्कूल ऑफ आर्ट दिल्ली
8. मुकुल चंद्र डे गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट कोलकाता

इन सभी कलाकारों से प्रेरणा लेकर सुधीर रंजन खस्तगीर,वीरेश्वर सेन,सुखबीर सिंह सिंघल, बद्रीनाथ आर्य और नित्यानंद महापात्रा अन्य कलाकारों ने वॉश पद्धति में कार्य किया तथा इसके विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.69

भारत में वॉश पद्धति बंगाल शैली का आधार रही परंतु भारत में इसके इतिहास की कहानी हमें समृद्ध संस्कृति आदान–प्रदान के युग में पुन ले जाती है। तथा पुन संस्कृति व चित्रकला से परिचित कराती है। 20 सी सती के शुरुआत में अभिनंदन नाथ टैगोर जैसे कलाकार एक अखिल एशियाई सांस्कृतिक पहचान की कल्पना कर रहे थे और उन्होंने प्रेरणा हेतु फारस से लेकर जापान तक की परंपराओं का अवलोकन किया रविंद्र नाथ टैगोर की जापानी कलाकार ओकाकुरा काकुजी के साथ मित्रता के कारण कोलकाता में कई अन्य जापानी कलाकार जैसे योकोहमा ताइकन हिशिदी शुन सो और कटसूता शौकीन को महाकाव्य से परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ। वही बंगाल शैली के कलाकारों ने जापानी कलाकारों से वॉश तकनीक या स्याही और ब्रश के सूक्ष्म प्रयोग को अपनाया तब से वॉश पद्धति के विभिन्न कलाकारों द्वारा व्यापक रूप से व्याख्या की गई।

वॉश पद्धति

वॉश चित्रण बंगाल शैली की विषेशता रही है।बंगाल में विदेशी कलाकारों के आगमन से देश के विद्यार्थियों को नवीन शैलियों और तकनीक को सीखने का महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त हुआ। वॉश एक ऐसी विशिष्ट पद्धति है जिसमें जल रंग व टेंपरा दोनों का ही व्यवहार हो सकता है जल रंगों का व्यवहार सामान्य जल रंग की ही भांति होता है परंतु रंगों को स्थाई तो प्रदान करने के लिए एक विशेष तकनीक का व्यवहार होता है। वॉश चित्रकला की एक ऐसी पद्धति है जिसमें अधिक घोलक (जल या घोलक तेल) में अल्प रंजन लेप मिलाकर तूलिका द्वारा गीले अथवा सूखे कागज या कैनवास पर लगाया जाता हैं परिणाम स्वरूप एक पारदर्शक, मृदुल चिकना व एकसार क्षेत्र जिसमें तूलिका घात दृष्ट्या नहीं होता, प्राप्त होता है। जिस कारण इसे वॉश पद्धति कहा जाता है। उच्च आधुनिक भारतीय कलाकारों ने टेंपरा का प्रयोग करके वह चित्रण का समापन करते थे जिसमें ओपेक रंगों का प्रयोग किया जाता था। जबकि अभिनेंद्र नाथ टैगोर ने इस पद्धति को जापानी कलाकारों से सीखा था परंतु इसमें उन्होंने भारतीय पद्धति को मिश्रित कर नवीकृत पद्धति का निर्माण किया इस पद्धति में चित्रण निर्माण हेतु कैसन कागज फैबियानो कागज कैट पेपर जर्मन स्कॉलर पेपर आदि का प्रयोग किया जाता है।इस विधि में पहले कागज पर रेखांकन के पश्चात कागज को भी गया जाता है फिर उसे पर सावधानी से रंग लगाया जाता है फिर उसे सुखाकर प्रवाहित जल से धोया जाता है। यह प्रक्रिया मनवांछित प्रभाव अपने तक दोहराई जाती है तत्पश्चात चित्र में फिनिशिंग की जाती है।

वॉश पद्धति के प्रमुख कलाकार

अवनींद्रनाथ ठाकुर - टैगोर् वॉश तकनीक के प्रणेता थे।उन्होंने वॉश पद्धति की खोज कर भारतीय चित्रकला में नए युग की शुरुआत की रविंद्र नाथ टैगोर जी ने कहा था उन्होंने देश को आत्महीनता के पाप से बचाया और उसे निराशा के गर्त से निकलकर वह सम्मान प्राप्त कराया है जो अधिकार से उसका था। अवनींद्रनाथ ठाकुर कलात्मक रुचि रखने वाले सदस्य थे इन्होंने कला शिक्षा का प्रशिक्षण इटली के चित्रकार गिलहार्डी तथा पेस्टल रंग और तेल तकनीक के गुण पश्चिमी कलाकार एल सी पामर से सीखी तथा जापानी कलाकारों से उन्होंने वॉश तकनीकी कला सीखी" सुरेंद्रनाथ गांगुली के घर पर एक दिन अवनींद्रनाथ ने तईकान को चित्र बनाते देखा ताईकान ने चित्र बनाने के बाद पूरे चित्र पर जल से चपटे बालों वाली तूलिका को फिर दिया इसे देखकर अवनी बाबू

के मन में इस तकनीक में कार्य करने का विचार आया और उन्होंने अपने पूरे चित्र को जल से नहला दिया जिससे बहुत ही मृदुल और कोमल प्रभाव प्राप्त हुआ और इस तरह वॉश पद्धति का भारत में सूत्रपात हुआ।' अवनी नाथ टैगोर ने 1905 ईस्वी में वॉश चित्रण करना शुरू किया।जिसमें उन्होंने भारत माता चित्र की रचना की इस चित्र को बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इनके प्रमुख चित्रों में यात्रा का अंत,अशोक क्वीन, रुक्मणी पत्र लिखते हुए,मुगल श्रंखला ,उमर खय्याम श्रृंखला आदि।

नंदलाल बोस– बस शिव सिद्ध कलाकार माने जाते हैं उनके चित्रों में लयात्मक विशेष दर्शनीय है बॉश के प्रमुख चित्रों में वीणा वादिनी सती का देह त्याग है।

असित कुमार हलदर– अवनींद्रनाथ टैगोर के शिष्यों में असित कुमार हलदर का नाम महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इनमें मूर्तिकार, शिल्पकार और दार्शनिक तीनों के गुण का समावेशन था। असित को बंगाल का रंग कवि भी कहा जाता था आप सम्मान सहजता के साथ तेल, टेंपरा, जल रंग व आपके द्वारा प्रयुक्त नई शैली लतिस (लाख द्वारा लकड़ी पर) में कार्य करते थे ।इन्होंने वॉश प्रविधि में अनेक कलाकृतियों की रचना की जिसमें औरत पढ़ते हुए मां और बच्चा नृत्यांगना संथाल कॉल कर्मी आदि हैं।

शैलेंद्र नाथ डे– इन्होंने महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट जयपुर में शिक्षक के पद पर रहकर कार्य किया सत्यम शिवम सुंदरम के साथ ही कुरूप में भी सुंदर अभिव्यंजना की रचनात्मक कल्पना की। मेघदूत इनकी महत्वपूर्ण चित्र श्रृंखला है।

अब्दुल रहमान चुगताई– इनको रंगों का सम्राट की संज्ञा दी गई इनकी रंग योजना निराली है । हरीमन तोता राधा कृष्ण कई शहर की राजकुमारी आदि उनके प्रसिद्ध चित्र रहे हैं।

हरिहर लाल मेढ़– हरिहर लाल मेढ़ वॉच चित्रकार के साथ–साथ व्यक्ति चित्रकार भी थे। लखनऊ के वर्ष चित्रकला में उनका विशेष स्थान है मेघदूत इनकी सर्वाधिक सफल चित्र श्रृंखला है।

सुधीर रंजन खस्तगीर– खस्तगीर गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट लखनऊ में प्राचार्य रहे। इन्होंने मूर्तिकलाऔर चित्रकला दोनों में कार्य किया । नववधू, बसंत, यात्रा,मां और शिशु ,भिक्षुणी आदि इनके प्रमुख चित्र रहे हैं।

सुखबीर सिंह सिंघल– सुखबीर सिंह सिंघल वॉश पद्धति के प्रसिद्ध चित्रकार हैं। उनके चित्र पौराणिक विश्व पर आधारित रहे हैं।श्री सिंघल के चित्रों की रेखाएं संयोजन दृश्य एवं विषयगत प्रभाव उनकी व्यापक सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं वह मानते हैं कि भारतीय साहित्य दर्शन और संस्कृति के मूल का ज्ञान हुए बिना हमारी रचना पूर्ण और प्रभावी नहीं हो सकती साहित्य तथा अन्य ललित कलाओं का विशेष ज्ञान ही हमारी रचना को संजीव बनाकर दर्शन को अभिभूत कर उसे आत्मिक सुख को अनुभूत करता है। चित्र में भावनात्मक और स्वीट नीले पीले और लाल रंगों की आभा दर्शनीय रही है प्रमुख चित्रों में श्रृंगार,एकाग्रचित अर्जुन,प्रस्ताव,प्रथम मिलन आदि हैं।

बद्रीनाथ आर्या– बी आर्य वॉश पद्वति के उत्तर भारत में नव बंगाल शैली के प्रतिपादक रहे हैं उन्होंने वॉश पद्धति में बड़े–बड़े चित्र बनाएं उनके चित्रों के विषय महाकाव्य काव्य पौराणिक रहे है।उनके चित्रों में सांवरिया,शीत रात्रि,भारत मिलाप,प्रशासनीय चित्र रहे हैं।

राजेंद्र प्रसाद– राजेंद्र प्रसाद जी भी लखनऊ से संबंध वॉश पद्धति के प्रतिभावान चित्रकार हैं। वॉश पद्धति को लेकर आधुनिकतावादी प्रगतिशाली कलाकार है।

श्याम बिहारी अग्रवाल– अग्रवाल जी एक कला मर्मज्ञ हैं।चित्रकला का कोई रूप उनसे अछूता नहीं रहा है।ब्लैकस्मिथ अभिसारिका आदि उनके प्रसिद्ध चित्र हैं।अग्रवाल जी एक्रिलिक रंग में भी वॉश जैसा प्रभाव लाने के लिए जाने जाते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय चित्रकला में वॉश पद्धति स्वदेशी कहीं जा सकने वाली रचना प्रविधि की खोज का परिणाम थी एक ऐसी शैली जिसे भारतीय कहा जा सके। वॉश पद्धति कि भारतीय चित्रकला में विशेष भूमिका रही है।इस पद्धति को अवनींद्रनाथ टैगोर ने जितनी मेहनत और लगन से प्रारंभ किया इस तरह उनके शिष्यों ने इस उत्साह व समर्पण से पूरे देश में इसका प्रचार प्रसार किया।आधुनिक से समकालीन तक आते–आते वॉश पद्धति विलुप्त हो गई किंतु कुछ संस्थाओं के कलाकारों ने इसे जीवित रखा का सफल प्रयास किया। जिसमें वॉश पद्धति को अपनाने वाले तथा उसमें अपना विशेष योगदान देने वाले कलाकारों में सुखबीर सिंह सिंघल,हरिहर लाल मेढ़ ,बद्रीनाथ आर्य, राम जैसवाल आदि कलाकार रहे हैं। कलाकारों के योगदान को और वॉष पद्धति के महत्व को समझने हेतु शोध पत्र लिखा गया है।

संदर्भ

1. वर्मा डॉ अविनाश बहादुर भारतीय चित्रकला इतिहास प्रकाश डिपो बरेली 1977
2. सनातन समिति थे क्रिएशन का वॉश पेंटिंग्स
3. शोकेस बंगाल स्कूल नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट न्यू दिल्ली
4. त्रिपाठी,श्रीनिवास : साक्षात्कार राष्ट्रीय सहारा, अप्रैल 17-23-1983
5. चौतन्य,कृष्ण, हिस्ट्री ऑफ इंडियन पेंटिंग : द मॉडर्न पीरियड , अभिनव पब्लिकेशन 1994
6. प्रताप डॉ रीता भारती चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास राजस्थान हिंदी अकादमी जयपुर 2008
7. प्राणनाथ भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया। 5 ग्रीन पार्क न्यू दिल्ली
8. मिश्र अवधेश भारतीय समकालीन कला और लखनऊ के कलाकार कला दीर्घा अप्रैल 2010 पृ० सं०–1100
9. अग्रवाल गिरिराज के आधुनिक भारतीय चित्रकला संजय पब्लिकेशन 2015
10. www.wikipedia.com
11. wwwsukhvirsanghal.com
12. विरंजन राम समकालीन भारतीय कला 2003